Ashoka
B.A I

1st Day. ①

धम्म-प्रचार के उपाय

Measures for propagation of 'Dhamma'

अशोक ने अपने 'धम्म' के प्रचार के लिए काफी प्रयास किया और इसमें उसे सन्तोषजनक सफलता भी मिली। उसके धर्म प्रचार के पीछे जनकल्याण की भावना निहित थी। इसके पीछे लोक सेवा की भावना थी। वह अपने सार्वभौतिक उच्च नैतिक धर्म से समस्त विश्व का हित करना चाहता था। सर्वसाधारण तक अपने 'धम्म' का सन्देश पहुँचाने के लिए अशोक ने निम्नलिखित साधनों को अपनाया।

(i) अशोक द्वारा धर्म पालन :- अशोक कोरा आदर्शवादी और सिद्धान्तवादी नहीं था। उसने जिन धार्मिक आदर्शों एवं सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया, उन्हें उसने अपने जीवन में भी कार्यान्वित किया। उसने उन आदर्शों और सिद्धान्तों के अनुसार आचरण भी किया। एक सच्चे बौद्ध भिक्षु की भाँति उसने त्यागमय जीवन व्यतीत किया। उसने आखेट खेलना, जीवों की हिंसा करना, माँसाहारी भोजन, हिंसात्मक मनोरंजन इत्यादि का त्याग किया। उसके ऐसे सेवा और त्यागमय जीवन, उसकी धर्मकामना, धर्मशीलन और धर्म परायणता का जनसाधारण पर विशेष प्रभाव पड़ा और लोगों ने अपने सम्राट के आदर्शों का अनुकरण किया।

(ii) धर्म यात्रा :- अशोक ने विहार-यात्राओं (Pleasure tours) के स्थान पर धर्म यात्राएँ (Religious tours) प्रारंभ की। इन यात्राओं के दौरान उसने स्वयं बौद्ध धर्म के पवित्र स्थानों (लुम्बिनिवन, कपिलवस्तु, बोधगया, सारनाथ, कुशीनगर, श्रावस्ती, वैशाली) का भ्रमण किया। उसने अपने सन्देश का प्रचार ~~विभिन्न~~ विभिन्न सम्प्रदायों के बीच करके धार्मिक वाद-विवाद का भी आयोजन किया।

(iii) दिव्य रूपों का प्रदर्शन :- धम्म के प्रति जनता का अनुराग बढ़ाने के लिए अशोक ने सार्वजनिक अवसरों पर दिव्य रूपों का प्रदर्शन प्रारम्भ किया। इनमें विमान दर्शन, हस्ति दर्शन, अग्नि स्कन्ध आदि अन्य दिव्य रूपों का प्रदर्शन किया जाता था।

Scanned with CamScanner

(iv) धर्म श्रावण :- अशोक ने लोगों को धर्मनिष्ठ और सदाचारी बनाने के लिए धर्म श्रावण की व्यवस्था की। इसके अन्तर्गत धार्मिक विषयों पर अशोक सन्देश देता था, तथा विविध प्रकार के धार्मिक भाषण, प्रवचन आदि होते थे। इसमें राज्य के अनेक अधिकारी (रज्जुक, युक्त, प्रादेशिक) भाग लेते थे।

(v) धर्मानुशासन :- अशोक ने धम्म के अनुशासन सम्बन्धी नियमों तथा - उपनियमों को प्रकाशित करवाया और उनके प्रचार एवं पालन के लिए विशेष पदाधिकारी नियुक्त किये। ये अधिकारी (रज्जुक, युक्त, प्रादेशिक) साम्राज्य का दौरा करते थे और इस बात का पता लगाते थे कि लोग धर्मानुशासन का पालन करते हैं या नहीं।

(vi) दान व्यवस्था :- साम्राज्य के प्रमुख नगरों एवं अन्य स्थानों पर अशोक ने रोगियों, दीन-दुखियों, अपंगों निस्सहायों, धार्मिक संस्थाओं आदि के लिए दान देने की व्यवस्था की। इससे धर्म के प्रचार में सहायता मिलती थी और जनता भी प्रभावित होती थी।

(vii) धर्म विभाग की स्थापना एवं धर्म महामात्रों की नियुक्ति :- धर्म प्रचार, धर्मानुशासन तथा दान व्यवस्था के लिए अशोक ने धर्म विभाग की स्थापना की। धर्म विभाग का प्रधान अधिकारी धर्म महामात्र कहलाता था। धर्म महामात्रों के साथ स्त्री महामात्र, ~~प्रजाभूमिक~~ प्रजाभूमिक तथा अन्य कर्मचारी भी होते थे। सर्वसाधारण में धम्म प्रचार और उनके आध्यात्मिक कल्याण के लिए प्रयत्न करना इन कर्मचारियों का प्रमुख कार्य था।

(viii) धर्म मंगल :- अशोक ने विविध प्रकार के खोखले हिंसात्मक मनोरंजन, बाह्य धार्मिक अनुष्ठानों पर प्रतिबन्ध लगा दिया था और उसके स्थान पर धर्म मंगल प्रारम्भ किया। इसके अन्तर्गत धार्मिक कार्य, श्रमणों और ब्राह्मणों को दान, धार्मिक उपदेश, आदेश का प्रदर्शन, सदाचार पर बल आदि कार्य होते थे।

P.T.O.

Scanned with CamScanner